6

जे. एम. कीन्स

[J. M. KEYNES]

संक्षिप्त परिचय

प्रसिद्ध आधुनिक अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स का जन्म सन् 1883 ई. में इंग्लैण्ड में हुआ था। इनके पिता जे. एन. कीन्स एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थे। कीन्स ने उच्च शिक्षा के लिए सन् 1902 ई. में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहां से 1905 में उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। यहां पर वे महान अर्थशास्त्री एल्फ्रेड मार्शल के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। 1906 में उन्होंने आई. सी. एस. (ICS) की परीक्षा पास की और 1906-08 तक इण्डिया ऑफिस में कार्य किया। इसके बाद वहां से त्याग पत्र देकर सन् 1909 में कैम्ब्रिज के किंग्स कॉलेज में अध्यापक हो गए। उन्होंने 1944 की ब्रेटनवुड सभा में ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व किया तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के गठन में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक प्रसिद्ध पुस्तकों की रचना की तथा सैकड़ों निबन्ध लिखे। उनकी पुस्तकों में 1936 में प्रकाशित पुस्तक ''*The General Theory of Employment Interest and Money*'' युग प्रवर्तक सिद्ध हुई है। 21 अप्रैल, 1946 को दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गयी।

कीन्स का सामाजिक दर्शन

कीन्स का आदर्श समाज कैसा है यह विवाद का प्रश्न है। एक बात निर्विवाद है कि वे समाज की आर्थिक बुराइयों से दुखी थे और उनका आर्थिक चिन्तन बेकारी, गरीबी तथा अभाव आदि के कारण और इलाज ढूंढ़ने में ही लगा था।

उन्होंने पाया कि **पूंजीवादी समाज में धन का असमान वितरण, मन्दी, बेकारी तथा गरीबी अनिवार्य हैं। मुक्त अर्थव्यवस्था समाज की आर्थिक विषमता को दूर नहीं कर सकती। परन्तु साथ ही वे साम्यवाद को भी अच्छा नहीं समझते थे। उन्होंने राष्ट्रीयकरण को ठीक नहीं माना, यद्यपि वे राज्य के द्वारा हस्तक्षेप तथा नियन्त्रण को आवश्यक मानते थे।** उनके सिद्धान्त का एक आवश्यक निष्कर्ष यह भी है कि धन का न्यायपूर्ण वितरण किया जाय तभी समाज की प्रभावशाली मांग या समर्थ मांग (Effective Demand) बढ़ सकती है। समाज के धन के वितरण में राज्य के हस्तक्षेप की बात से उनका झुकाव समाजवाद की तरफ होता है, परन्तु मूलरूप में वे पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के ही पक्ष में थे। व्यक्तिगत उद्योग तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति आदि का उन्होंने समर्थन किया है।

वे अधिक उपभोग के पक्ष में थे, इसके लिए अधिक मजदूरी को आवश्यक मानते थे। प्रतिष्ठित सिद्धान्त की इस मान्यता का उन्होंने खण्डन किया कि मजदूरी घटाने से रोजगार बढ़ता है। वस्तुतः कीन्स 'नियन्त्रित एवं प्रतिबन्धित पूंजीवाद' (Controlled and Restricted Capitalism) के ही समर्थक थे। उनका कहना था कि सरकार को बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से विनियोग तथा उपभोग आदि को नियन्त्रित करते रहना चाहिए, जिससे समाज की अनेक विषमताएं दूर होती रहें।

कीन्स का आदर्श समाज वह है, जिसमें व्यक्ति को स्वतन्त्रता हो, पूर्ण रोजगार (Full Employment) हो, धन का न्यायपूर्ण वितरण हो, उपभोग की प्रमुखता हो तथा ऊंची मजदूरी हो, परन्तु अन्य साधनों को भी पर्याप्त पुरस्कार मिलता रहे। सरकार प्रबन्धक तो हो परन्तु स्वामी न हो आदि।

Scanned by PDF Scanner

कीन्स के आर्थिक सिद्धान्त

कीन्स के सिद्धान्त अलग-अलग नहीं हैं। वे एक विशाल योजना के विभिन्न अंग हैं और एक दूसरे से संयुक्त हैं। इस विशाल योजना के मूल में उसका समर्थ मांग का सिद्धान्त है, जिसे सर्वप्रथम समझना चाहिए।

(I) समर्थ मांग
(EFFECTIVE DEMAND)

रोजगार उत्पादन के स्तर पर निर्भर करता है और देश की अर्थव्यवस्था में रोजगार तथा उत्पादन एक ही समझे जा सकते हैं। उत्पादन के घटने-बढ़ने के साथ ही रोजगार भी घटता-बढ़ता है, यदि अन्य बातें समान रहें। उत्पादन और रोजगार दोनों का ही कारण समाज की धन की वह मांग है जो समाज उपभोग तथा विनियोग के लिए मांगता है। यही समर्थ मांग (Effective Demand) है अर्थात्, पूरे समाज में राष्ट्रीय आय या उत्पादन प्रभावशाली मांग के बराबर होता है और वह उपभोग की वस्तुओं या उत्पादन की वस्तुओं (Capital goods) की मांग के बराबर होती है। यह मांग जनता द्वारा भी हो सकती है और सरकार द्वारा भी। इसे सूक्ष्म रूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है :

$$Y = C + I + G$$

यहां Y = राष्ट्रीय आय

C = उपभोग (Consumption)

I = विनियोग (Investment)

G = सरकार द्वारा विनियोग और उपभोग

एक अन्य दृष्टिकोण से हम कह सकते हैं कि समाज की कुल आय (Y) समाज के कुल व्यय (E) के बराबर होती है। आय बढ़ने के लिए व्यय बढ़ना जरूरी है। समर्थ मांग व्यय के बराबर होती है। समाज का व्यय या तो विनियोग या निवेश (Investment या I) पर होता है यानी मशीन आदि स्थायी वस्तुओं पर होता है या उपभोग (Consumption या C) की वस्तुओं पर होता है। उपभोग भी मुद्रा से नापा जाता है और विनियोग भी मुद्रा से नापा जाता है। संक्षेप में समर्थ मांग समाज का कुल व्यय है या कुल आय है क्योंकि व्यय = आय।

अब कीन्स उपभोग और विनियोग की बारीक व्याख्या एवं उसके अलग-अलग सिद्धान्त समझाते हैं। यही उनकी जनरल थ्योरी की पूरी योजना है। निम्नलिखित सारणी से यह योजना स्पष्ट हो जाती है :

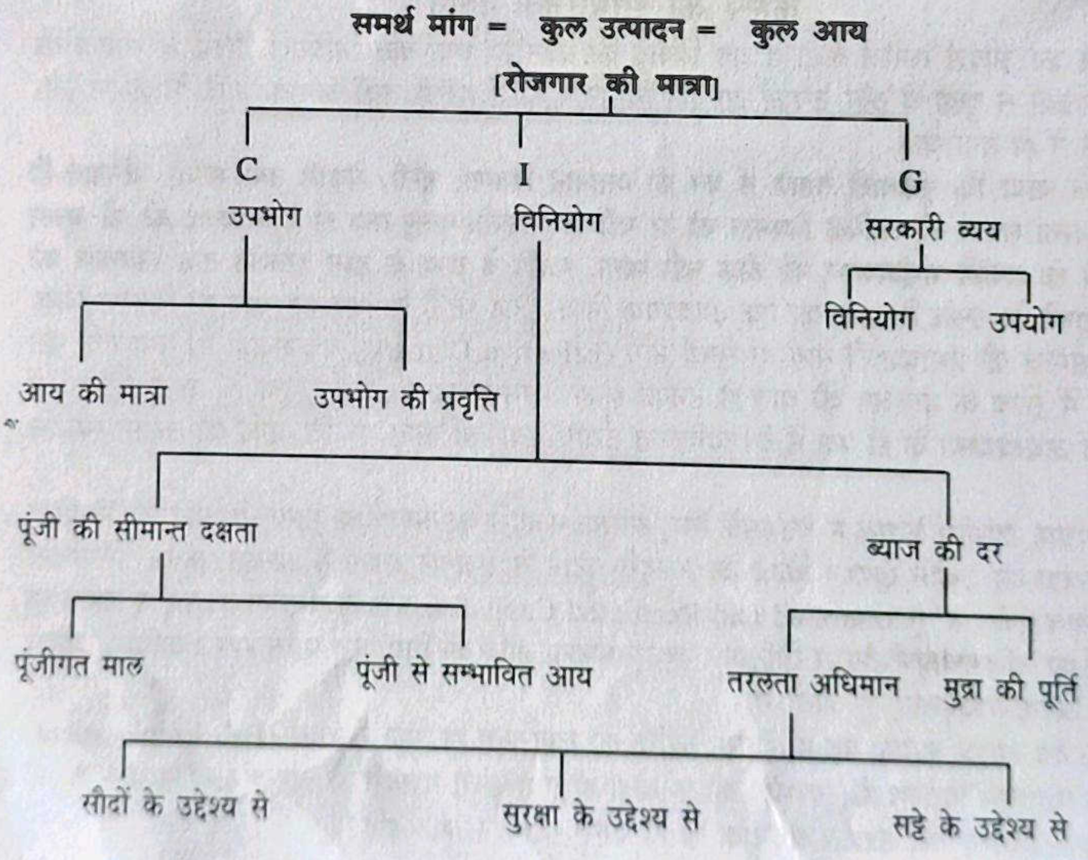

Scanned by PDF Scanner

उक्त सारणी का संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है :

(1) समर्थ मांग समाज के व्यय के बराबर है। समाज का व्यय या तो विनियोग पर होता है या उपभोग पर। क्राउथर के शब्दों में या तो स्थायी वस्तुओं पर व्यय होता है या अस्थायी वस्तुओं पर। स्थायी वस्तु पर व्यय ही विनियोग है। अस्थायी वस्तु पर व्यय उपयोग है।

(2) उपभोग की मात्रा दो बातों पर निर्भर रहती है—एक तो आय (Income) की मात्रा पर और दूसरी समाज की उपभोग प्रवृत्ति (Propensity to Consume) पर, अर्थात् वह दर जिस पर समाज उत्पन्न धन का उपभोग करता है।

(3) विनियोग की मात्रा भी दो बातों पर निर्भर रहती है—एक तो ब्याज की दर और दूसरी पूंजी में धन उत्पन्न करने की क्षमता, जिसे कीन्स 'Marginal Efficiency of Capital' पूंजी की सीमान्त क्षमता कहते हैं।

(4) ब्याज की दर के भी दो कारण हैं एक तो तरलता अधिमान (Liquidity Preference), अर्थात् समाज की आमदनी को नकद रूप में रखने की मांग और दूसरी समाज में मुद्रा की पूर्ति।

(5) समाज कितनी आय को नकद रूप में रखना चाहता है। यह तीन बातों पर निर्भर करता है, अर्थात् इसके तीन उद्देश्य (Motives) होते हैं। पहला तो सौदों का भुगतान करने के लिए मुद्रा की आवश्यकता होती है, जिसे कीन्स सौदा उद्देश्य (Transaction Motive) कहते हैं। दूसरे, आकस्मिक खर्चों के करने के लिए नकद की आवश्यकता होती है, जिसे सुरक्षा उद्देश्य (Precautionary Motive) कहा गया। इसके अतिरिक्त समाज में सट्टे के उद्देश्य से भी मुद्रा की आवश्यकता होती है, जिसे उन्होंने सट्टा उद्देश्य (Speculative Motive) कहा है।

(II) उपभोग का सिद्धान्त एवं उपभोग क्रिया
(CONSUMPTION FUNCTION)

उपभोग को कीन्स ने बहुत अधिक महत्व दिया है, क्योंकि यह समर्थ मांग का अत्यन्त महत्वपूर्ण घटक (Factor) है। इस पर उत्पादन आय एवं रोजगार बड़ी सीमा तक निर्भर रहते हैं। उपभोग स्वयं भी कई बातों पर निर्भर होता है। कीन्स ने उन्हें निम्नांकित दो वर्गों में विभाजित किया है :

(1) **समाज की आय**—व्यक्ति या समाज आय के अनुसार ही उपभोग पर भी व्यय करता है, परन्तु इस विषय में कीन्स ने एक मनोवैज्ञानिक नियम भी बताया है। उनका कथन है कि "मनुष्य की यह प्रकृति है कि औसतन वह आय बढ़ने के साथ-साथ उपभोग भी बढ़ाता है, परन्तु उपभोग उस गति से नहीं बढ़ता जिस गति से आय बढ़ती है।"

उल्लेखनीय है कि आय बढ़ने पर उपभोग और बचत दोनों बढ़ते हैं, परन्तु उपभोग मन्द गति से बढ़ता है जबकि बचत तेजी से। दूसरी बात यह है कि चूंकि अल्प-काल में जीवन स्तर में परिवर्तन होना कठिन है, अतः प्रारम्भ में उपभोग की वृद्धि कम तेज होती है, किन्तु बाद में बढ़ जाती है।

(2) **उपभोग प्रवृत्ति** (Propensity to Consume)—इससे कीन्स का तात्पर्य आय तथा उपभोग के अनुपात से था। समाज अपनी आय का जिस दर से उपभोग करता है, वह उपभोग प्रवृत्ति है। इसे प्रतीकात्मक रूप से इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—$C = f(y)$ इसका हम निम्नांकित दो प्रकार से माप कर सकते हैं :

(क) औसत उपभोग प्रवृत्ति (Average Propensity to Consume)—कुल आय और कुल उपभोग का अनुपात औसत उपभोग प्रवृत्ति है। सूत्र रूप में $APC = \frac{C}{Y}$, इस प्रकार लिखा जाता है।

(ख) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume)—उपभोग में वृद्धि का आय में वृद्धि से जो अनुपात होता है उसे उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति कहते हैं। इसे सूत्र रूप में इस प्रकार लिखते हैं :

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

Scanned by PDF Scanner

उपभोग प्रवृत्ति पर प्रभाव डालने वाली वस्तुगत परिस्थितियां

उपभोग करने की प्रवृत्ति कई बाह्य परिस्थितियों (Objective Factors) पर निर्भर होती है, ये परिस्थितियां अग्र प्रकार हैं :

(1) **मजदूरी द्वारा प्राप्त आय** (Wage-units)—मजदूरी समाज की, खास तौर से मजदूरों की आय है। मजदूरी बढ़ने से उपभोग भी बढ़ता है, परन्तु यहां पर यह याद रखना चाहिए कि उपभोग की मात्रा तो बढ़ती है, लेकिन उपभोग-प्रवृत्ति अल्पकाल में अधिक नहीं बदलती।

(2) **आय और शुद्ध आय के अन्तर में परिवर्तन** (Change in the Difference between Income and net Income)—उपभोग की मात्रा शुद्ध आय पर निर्भर होती है।

(3) **सम्पत्ति के मूल्यों में परिवर्तन होने से आकस्मिक आय**—धनी वर्ग की सम्पत्ति (Assets) के मूल्य में परिवर्तन उपभोग प्रवृत्ति को प्रभावित करता है।

(4) **अपहार या बट्टे की दर** (Rate of Time Discounting)—सामान्य रूप से इसे ब्याज की दर माना जा सकता है।

(5) **सरकारी वित्त नीति** (Fiscal Policy) **में परिवर्तन,** अर्थात् कर आदि का प्रभाव।

(6) **वर्तमान और भविष्य की आय के सम्बन्ध में** होने वाले अनुमान में परिवर्तन।

उपभोक्ता प्रवृत्ति व्यक्तिगत प्रभाव

कीन्स ने इन्हें 'Subjective Factors' कहा और आठ वर्गों में विभक्त किया है। इनका व्यय की मात्रा पर प्रभाव पड़ता है। ये वर्ग निम्नांकित हैं :

(1) **सावधानी** (Precaution)—आकस्मिक खर्चों के लिए सुरक्षित कोष बनाना।

(2) **दूरदर्शिता** (Foresight)—भविष्य के निश्चित और अनुमानित व्यय का ध्यान, जैसे—बुढ़ापा तथा बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था।

(3) **गणना** (Calculation)—अभी छोटे उपभोगों का त्याग करके भविष्य में बड़ी मात्रा में उपभोग की आशा।

(4) **सुधार** (Improvement)—जीवन स्तर में वृद्धि की व्यवस्था करना।

(5) **स्वाधीनता** (Independence)—भविष्य में आर्थिक स्वाधीनता की आशा।

(6) **उद्योग या व्यापार करने की आशा** (Enterprise)—अर्थात् संचित राशि से धन्धा करना।

(7) **उत्तराधिकार में धन छोड़ना** (Pride)।

(8) **कंजूसी** या धन के प्रति आसक्ति (Avarice)।

उपभोग के महत्व को दिखाने के लिए कीन्स ने अपने ग्रन्थ '*Treatise on Money*' में एक बोध कथा (Parable) लिखी है, जिसे **केलों की बोध कथा** (Parable Bananas) कहा जाता है। यह इस प्रकार है : एक गांव में केवल केले ही उत्पन्न होते थे तथा समाज का वही उत्पादन था और वही एकमात्र भोजन एवं उपभोग की सामग्री थी। उस समाज के कुछ सदस्यों ने केलों का उपभोग कम करके धन की बचत शुरू की। (यह मान लिया गया है कि निर्यात नहीं था) इसका परिणाम यह हुआ कि केलों की कीमत गिरी, परन्तु उत्पादकों को लाभ भी कम हुआ, जिस कारण कुछ उत्पादन कम हो गया और परिणामस्वरूप कुछ लोगों को बेकार भी होना पड़ा। बचत करने वाले यदि उस धन को नवीन पेड़ लगाने में खर्च कर देते, तो उनकी आमदनी बढ़ती, उपभोग बढ़ता और इस प्रकार समाज का उत्पादन तथा रोजगार दोनों ही बढ़ते।

कीन्स की 'जनरल थ्योरी' के विचार काफी जटिल होते हुए भी इस कथा से अधिक भिन्न नहीं हैं। समाज में उपभोग की मात्रा कम होने से बेकारी, अति उत्पादन तथा मन्दी आदि फैलते हैं। उन्होंने उपभोग तथा विनियोग दोनों के ही बढ़ाने पर जोर दिया है।

(III) गुणक सिद्धान्त
(THEORY OF MULTIPLIER)

कीन्स का यह महत्वपूर्ण सिद्धान्त है और उपभोग प्रवृत्ति से घनिष्ठ रूप में सम्बन्धित है। यह दो प्रकार का होता है : (1) **विनियोग गुणक** (Investment Multiplier)—यह विनियोग (Investment) तथा उसके द्वारा होने वाली आय की वृद्धि के अनुपात को कहते हैं। (2) **रोजगार गुणक** (Employment Multiplier)—प्रारम्भिक रोजगार की मात्रा और विनियोग के बाद होने वाले रोजगार की मात्रा के अनुपात को रोजगार गुणक कहते हैं।

Scanned by PDF Scanner

कीन्स के सिद्धान्त में विनियोग गुणक का ही अधिक महत्व है, क्योंकि इसी का प्रत्यक्ष सम्बन्ध उपभोग से है। सिद्धान्त इस बात को बताता है कि प्रारम्भिक विनियोग से धन की वृद्धि कई गुनी हो सकती है। यदि कुल 5 करोड़ का विनियोग किया गया और समाज में इससे 20 करोड़ से धन की वृद्धि हुई, तो गुणक $\frac{20}{5} = 4$ होगा। सूत्र रूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है :

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

यहां K = गुणक है, Y आय है और I विनियोग।

गुणक का सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume) से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। इस प्रकार लिख सकते हैं :

$$K = \frac{1}{1 - M}$$

यहां M का अर्थ सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति है। 1 (One) में से M जब घटता है तो बचत निकलती है, इसलिए इस प्रकार भी लिख सकते हैं:

$$K = \frac{1}{S}$$

यहां S का अर्थ सीमान्त बचत प्रवृत्ति है। इसका अर्थ यह हुआ कि उपभोग प्रवृत्ति जितनी अधिक होगी, उतनी बचत कम होगी और उतना ही गुणक अधिक होगा। उपभोग प्रवृत्ति जितनी कम होगी, बचत उतनी ही अधिक होगी एवं गुणक उतना ही कम होगा।

(IV) रोजगार-सिद्धान्त
(THEORY OF EMPLOYMENT)

कीन्स से पूर्व प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की मान्यता थी कि पूर्ति स्वयं अपनी मांग निर्मित करती है, अतः अति उत्पादन का प्रश्न ही नहीं होता और रोजगार में कमी भी नहीं होती, अर्थात् पूर्ण रोजगार मुक्त अर्थव्यवस्था का स्वाभाविक लक्ष्य है। इस प्रतिष्ठित सिद्धान्त को कीन्स ने अमान्य किया और उसके स्थान पर रोजगार की मात्रा को समर्थ मांग (Effective Demand) पर निर्भर बताया। इसके घटने से रोजगार घटता है और बढ़ने से बढ़ता है। समाज में उत्पादन आय तथा रोजगार इसी के बराबर होते हैं।

समाज में कितने व्यक्तियों को कार्य मिलेगा, यह दो मात्राओं के साम्य पर निर्भर करता है, जो इस प्रकार हैं :

(1) **सकल मांग मूल्य** (Aggregate Demand Price)—पूरे समाज में रोजगार के किसी स्तर पर समाज के उद्योगपतियों को जो वास्तव में आय होने की आशा होती है, वह सकल मांग मूल्य कहलाता है। निर्माता को मजदूर रखने पर कुछ आय होती है और रोजगार की विभिन्न मात्राओं पर आय में अन्तर पड़ता है। आय और रोजगार के सम्बन्ध को दिखाने वाली तालिका सकल आय क्रिया (Aggregate Demand Function) को दिखाती है। सकल मांग मूल्य समाज के निर्माताओं की आमदनी को दिखाता है।

(2) **सकल पूर्ति मूल्य** (Aggregate Supply Price)—यह धन की उस मात्रा को कहते हैं जो रोजगार के विभिन्न स्तरों पर निर्माताओं को मिलनी ही चाहिए। यह लोगों को काम पर रखने का व्यय है।

समाज में जब तक रोजगार के द्वारा होने वाली आय रोजगार पर होने वाले व्यय से अधिक होगी, अधिक आदमी काम पर रखे जायेंगे। रोजगार का साम्य उस बिन्दु पर होगा जिस पर सकल मांग मूल्य और सकल पूर्ति मूल्य बराबर हो जायेंगे। आवश्यक नहीं कि इस बिन्दु पर अधिकतम या पूर्ण रोजगार (Full Employment) हो। जिस बिन्दु पर सकल मांग वक्र सकल पूर्ति वक्र को काटेगा, वही बिन्दु समाज में रोजगार की मात्रा निर्धारित करेगा।

Scanned by PDF Scanner

(V) पूंजी की सीमान्त दक्षता या उत्पादकता
(MARGINAL EFFICIENCY OF CAPITAL)

विनियोग दो बातों पर निर्भर होता है—एक तो ब्याज की दर और दूसरे पूंजी की सीमान्त दक्षता या सीमान्त उत्पादकता पर। यह विचार कीन्स ने **प्रो. इर्विंग फिशर** से ग्रहण किया। फिशर ने दक्षता के स्थान पर 'लागत पर आधिक्य या पुरस्कार की दर' (Rate of Return Over Cost) शब्दों का प्रयोग किया है।

सीमान्त उत्पादकता का विचार कीन्स ने स्पष्ट नहीं किया है, परन्तु उनका इससे तात्पर्य उस लाभ से है जिसकी विनियोगकर्ता आशा करते हैं। यह वास्तविक लाभ नहीं वरन् अपेक्षित लाभ (Expected Return or Productivity) है। पूंजी की सीमान्त दक्षता की उन्होंने निम्न परिभाषा दी है। ''पूंजी की सीमान्त दक्षता की और अधिक बारीकी से इस प्रकार परिभाषा दी जा सकती है कि वह अपहार (Discount) की उस दर के बराबर होती है जो वार्षिक-प्रतिभूतियों (Annuities) के वर्तमान मूल्य को, जोकि उसके समय अवधि की आय पर आधारित होता है, उनके पूर्ति मूल्य के ठीक बराबर कर दे।''

अधिक विनियोग होने पर पूंजी की सीमान्त दक्षता (MEC) घट जाती है। इसके दो कारण होते हैं, एक तो अधिक विनियोग के कारण लाभ की आशा घट जाती है और दूसरे विशेष प्रकार के पूंजीगत माल की अधिक मांग होने से उसका मूल्य बढ़ जायगा। इस कारण भी लाभ का अपेक्षित अनुपात घटेगा।

पूंजी की सीमान्त उत्पादकता पर ही व्यापार चक्र (Trade Cycle) निर्भर होता है। ब्याज की दर और पूंजी की सीमान्त उत्पादकता की तुलना पर ही विनियोग निर्भर रहता है। यदि ब्याज की दर ऊंची है, तो उसकी तुलना में MEC कम होने के कारण निर्माता कम विनियोग कर पाता है और मन्दी प्रारम्भ हो जाती है। ऊंची ब्याज की दर पर भी विनियोग हो सकता है यदि MEC उससे अधिक हो।

पूंजी की सीमान्त दक्षता करों, मुद्रा नीतियों, उत्पादन पद्धतियों, विदेशी व्यापार तथा राजनीतिक परिस्थितियों आदि का प्रभाव पड़ता है। कर अधिक लगने से भविष्य में आय की आशा घटती है, अतः MEC कम हो जाती है।

(VI) बचत तथा विनियोग
(SAVING AND INVESTMENT)

कीन्स के सिद्धान्त का एक महत्वपूर्ण भाग बचत तथा विनियोग की समानता बताना है। उनका कथन है कि बचत सदा विनियोग के बराबर होती है, अर्थात्—

$$S = I$$

वस्तुतः कीन्स के अनुसार बचत तथा विनियोग न केवल बराबर होते हैं, बल्कि वे एक ही वस्तु के दो रूप हैं। 'जनरल थ्योरी' में उन्होंने कहा है कि ''बचत और विनियोग की परिभाषा में मैंने लिखा है कि वे अनिवार्य रूप से बराबर होते हैं और पूरे समाज में वे एक ही वस्तु के दो पहलू हैं।'' इसको सामान्य अर्थ में इस प्रकार समझाना चाहिए कि समाज की वास्तविक बचत वही है जो समाज ने विनियोग या निवेश किया है। निवेश का अर्थ है स्थायी या पूंजीगत सामान जैसे मशीन, कारखाना, सड़क, भवन, बांध आदि पर होने वाला समाज का खर्च। समाज मुद्रा के रूप में बचत नहीं कर सकता केवल विनियोग के रूप में बचत कर सकता है, परन्तु कीन्स ने इसे एक गणित के सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया है।

कीन्स ने इसको एक सरल गणित द्वारा सिद्ध किया है। उत्पादन (O) दो प्रकार की वस्तुओं का होता है—एक तो उपभोग सामग्री (C) का और दूसरे पूंजीगत माल (या उत्पादन सामग्री) का जिनको खरीद कर विनियोग किया जाता है। इसे (I) कहा जा सकता है। अर्थात्,

$$O = C + I$$

राष्ट्रीय आय (Y) के दो उपयोग हो सकते हैं। या तो वह उपभोग में आती है या बचा ली जाती है, अर्थात्—

$$Y = C + S$$

चूंकि उत्पादन और राष्ट्रीय आय एक ही वस्तु के दो नाम हैं, अर्थात्—

$$Y = O$$

Scanned by PDF Scanner

इसलिए इसका अर्थ यह हुआ कि

$$C + I = C + S$$

अर्थात् $I = S$, अतः विनियोग बचत के बराबर होगा।

(VII) ब्याज का तरलता अधिमान का सिद्धान्त
(LIQUIDITY PREFERENCE THEORY)

कीन्स ने ब्याज का एक नवीन सिद्धान्त दिया है। ब्याज किस बात का पुरस्कार है। कीन्स का कथन है कि ब्याज धन की तरलता (Liquidity) का परित्याग करने का प्रतिफल है। जब धन उधार दिया जाता है, तो धन की तरलता समाप्त हो जाती है। तरल धन समाज के लिए अधिक उपयोगी होता है और व्यक्ति उसे तरल रूप में ही रखना चाहते हैं। इस पसंदगी के कीन्स ने तीन कारण बताये हैं :

(1) **साधारण सौदों के उद्देश्य से** (Transaction Motive), अर्थात् नित्यप्रति के भुगतान करने तथा क्रय-विक्रय करने के उद्देश्य से।

(2) **सावधानी के उद्देश्य से** (Precautionary Motive), अर्थात् भविष्य में होने वाली आकस्मिक घटनाओं की व्यवस्था के लिए।

(3) **सट्टे के उद्देश्य से** (Speculative Motive) अर्थात् भविष्य के विषय में बाजार की अपेक्षा अधिक जानकारी से लाभ कमाना इसका उद्देश्य है।

तरलता अधिमान (Liquidity Preference) मांग पक्ष की, मुद्रा रोकने की तथा मांग को प्रदर्शित करता है। तरलता अधिमान (L.P.) बढ़ने पर सामान्य स्थिति में ब्याज दर बढ़ती है और तरलता अधिमान कम होने पर ब्याज की दर गिरती है। इसी प्रकार ब्याज की दर बढ़ने से तरलता अधिमान या मुद्रा की मांग कम होती है और ब्याज की दर घटने से मुद्रा की मांग बढ़ती है।

ब्याज तरलता अधिमान के अतिरिक्त मुद्रा की पूर्ति पर भी निर्भर करता है। मुद्रा की पूर्ति वस्तु की पूर्ति के समान नहीं होती। वस्तु की पूर्ति एक प्रवाह के रूप में होती है और मुद्रा की पूर्ति एक संग्रह (Stock) के रूप में। मुद्रा की मांग का अर्थ मुद्रा को तरल रूप में रखने के आग्रह से है और मुद्रा की पूर्ति का अर्थ मुद्रा को नकद रूप में रखने के लिए प्रदान करने से होता है। पूर्ति बढ़ने से ब्याज की दर घटती है और पूर्ति घटने से ब्याज की दर बढ़ती है।

सौदों के लिए और सावधानी के उद्देश्य से जो तरलता अधिमान होता है उसका सम्बन्ध ब्याज की दर से अधिक नहीं होता, आय से अधिक होता है। सट्टे के उद्देश्य से तरलता अधिमान का सम्बन्ध ब्याज की दर से प्रत्यक्ष होता है।

ब्याज की दर पर तरलता अधिमान और मुद्रा की पूर्ति का साम्य होता है, परन्तु कीन्स ने यह भी कहा है कि ब्याज की दर से एक न्यूनतम बिन्दु पर लोग उधार देना बिलकुल बन्द कर देंगे, अर्थात् पूरे धन को नकद रखेंगे या तरलता अधिमान अनन्त हो जायगा। इस स्थिति को '**विनियोग बन्ध**' (Credit Deadlock) और इस वक्र को '**तरलता पाश**' (Liquidity Trap) कहा जाता है।

(VIII) व्यापार-चक्र का सिद्धान्त
(THEORY OF TRADE CYCLES)

व्यापार-चक्र के विषय में कीन्स का कथन है कि इनका प्रधान कारण पूंजी की सीमान्त दक्षता (Marginal Efficiency of Capital) में परिवर्तन होता है। इन पर दो गौण घटकों (Factors) का भी प्रभाव पड़ता है—एक है उपभोग-प्रवृत्ति (Propensity to Consume) और दूसरी है तरलता अधिमान (Liquidity Preference)। **कीन्स के अनुसार पूंजी की दक्षता का अर्थ धन द्वारा होने वाली आय की आशा है।**

व्यापार-चक्र की कीन्स ने यह परिभाषा दी है, "व्यापार-चक्र में समृद्धि काल में मूल्य बढ़ते हैं और बेकारी का प्रतिशत कम होता है, परन्तु बाद में व्यापार मन्दा होता है, मूल्य गिरते हैं और बेकारी बढ़ती है।"

Scanned by PDF Scanner

(IX) कीन्स द्वारा दिये गये व्यावहारिक सुझाव

कीन्स केवल सिद्धान्त बनाने वाले अर्थशास्त्री नहीं थे उनको अर्थव्यवस्था के सुधार का अनुभव भी था इस कार्य के लिए अर्थात् बेकारी तथा मन्दी दूर करने के लिए उन्होंने कई ठोस सुझाव दिये हैं, जो इस प्रकार हैं :

(1) **पम्प प्राइमिंग** (Pump Priming)—यह उनका सबसे प्रसिद्ध उपाय है। अवसाद या मन्दी दूर करने के लिए इसका उपयोग उन्होंने बताया है। इसका अर्थ मन्दी के दिनों में सरकार द्वारा उत्पादक कार्यों जैसे बांध तथा नहर आदि के निर्माण में होने वाले विनियोग से है। उनका सुझाव था कि सरकार को इन कार्यों में धन लगाना चाहिए। इससे समाज की क्रय-क्षमता बढ़ती है और उससे गुणक के अनुसार देश का धन बढ़ता है। इससे नियन्त्रित मुद्रा प्रसार होता है, वस्तुओं की मांग बढ़ती है और देश में फिर रोजगार बढ़ने लगता है। उन्होंने घाटे की अर्थव्यवस्था (Deficit Financing) का सुझाव दिया। इस सुझाव के अनुसार अमरीका में प्रयोग किया गया था, जिसे न्यू डील (New Deal) कहते हैं। अन्य देशों में भी घाटे की अर्थव्यवस्था का कार्यक्रम थोड़ा बहुत अपनाया जाता है।

(2) **उपभोग प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना**—यह कार्य सरकार अपनी मौद्रिक नीति तथा राजकोषीय नीति (Fiscal Policy) द्वारा कर सकती है। मुद्रा प्रसार से भी उपभोग प्रवृत्ति बढ़ती है। इस सुझाव के कारण उन्हें मुद्रा-प्रसारवादी कहा जाता है।

(3) **ब्याज की दर को नीची रखना**—इस पर कीन्स ने अधिक जोर दिया है। ब्याज जब कम होता है पूंजी सरलता से उधार ली जाती है और इससे समृद्धिकाल में स्थायित्व आता है। बैंक दर को भी घटाकर यह किया जा सकता है।

(4) **मजदूरी घटाने का विरोध**—यदि समाज में मजदूरी घटेगी तो क्रय-शक्ति कम होगी और इससे उत्पादन तथा रोजगार घटेंगे। मजदूरी घटाने से रोजगार घटता है। यह विचार प्रतिष्ठित विचार का विरोधी है, परन्तु यही अधिक सही है, परन्तु वे आवश्यक मजदूरी बढ़ाने के भी पक्ष में नहीं थे। स्थिरता ही सही स्थिति है।

(5) **बुद्धिमत्तापूर्ण मौद्रिक नीति**—मुद्रा को आवश्यकतानुसार सस्ता करना जरूरी है। सरकार प्रतिभूतियां (Securities) को खरीदकर एवं व्यापारिक बैंकों के सुरक्षित अनुपात को कम करके साख को प्रोत्साहन दे सकती है।

(6) **धन का वितरण न्यायपूर्ण करना**—कीन्स का कथन था कि उपभोग की मात्रा बढ़ाने के लिए समाज में धन का अधिक वितरण लाभप्रद है। चूंकि आय के अनुपात में उपभोग नहीं बढ़ता, अतः धन जब थोड़े व्यक्तियों के पास केन्द्रित हो जाता है, तो उपभोग कम रहता है। जब धन समाज में ठीक वितरित होता है तो उपभोग शक्ति बढ़ती है। गरीब व्यक्तियों की उपभोग प्रवृत्ति अधिक होती है। गरीबों पर कर कम लगाना चाहिए, किन्तु धनिक वर्ग पर अधिक।

(7) **मुक्त अर्थव्यवस्था का समर्थन नहीं**—कीन्स मुक्त अर्थव्यवस्था के पक्ष में नहीं थे। वे अर्थव्यवस्था के सुधार के लिए राज्य का हस्तक्षेप आवश्यक मानते थे, परन्तु वे राज्य के स्वामित्व के पक्ष में भी नहीं थे। उनका कथन था कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की यह मान्यता कि अर्थव्यवस्था स्वयं दोषों को ठीक कर देती है, सही नहीं है। "मेरे विचार में प्रतिष्ठित औषधि से उपचार नहीं हो सकता, हम इस पर निर्भर नहीं रह सकते। हमें शीघ्र लाभ करने वाली और कम पीड़ा देने वाली चिकित्सा चाहिए।" परन्तु कीन्स साम्यवाद के भी कट्टर विरोधी थे। संक्षेप में, वे ऐसी अर्थव्यवस्था के पक्ष में थे जिसमें राज्य भी आर्थिक क्रियाओं में हस्तक्षेप तथा कुछ नियन्त्रण करे।

कीन्स के सिद्धान्तों की आलोचना

कीन्स के सिद्धान्तों की आलोचना की सूची बहुत बड़ी है। यहां हम उनमें से कुछ का ही संक्षेप में वर्णन करेंगे।

(1) **कोई नवीनता नहीं**—कीन्स के अधिकांश सिद्धान्त प्राचीन हैं तथा उनमें कोई नवीनता नहीं है। कीन्स ने अपने से पूर्व अर्थशास्त्रियों के प्रति आभार भी प्रदर्शित नहीं किया। यद्यपि कीन्स का व्यापार-चक्र के सिद्धान्त तथा रोजगार का सिद्धान्त बहुत कुछ माल्थस पर आधारित है। सिसमांदी तथा रॉडबर्टस का उन पर प्रभाव है, परन्तु कीन्स के सिद्धान्त को उनकी नकल नहीं कहा जा सकता। उसमें काफी भेद भी है। उनका गुणक सिद्धान्त भी पुराना कहा जा सकता है, फिर भी कीन्स का संशोधन मानना ही पड़ेगा।

Scanned by PDF Scanner

प्रतिष्ठित सिद्धान्त ही नहीं वणिकवाद के कई विचारों को भी कीन्स ने ग्रहण किया है और उन विचारकों के प्रति अपना आभार भी प्रदर्शित किया है। कीन्स हस्तक्षेप (Intervention) को आवश्यक समझते थे, जैसा कि वणिकवादियों का भी मत था। वे भी ब्याज की नीची दर के पक्षपाती थे। हैने ने लिखा है, "कीन्स के कुछ विचार उन विचारधाराओं से बिलकुल मिलते हैं, जिनको एडम स्मिथ ने समाप्त करने का प्रयत्न किया था, अर्थात् वणिकवाद और प्रकृतिवाद से।"

(2) **केवल विकसित देशों पर लागू**—दूसरी प्रधान आलोचना यह है कि कीन्स का सिद्धान्त सामान्य सिद्धान्त नहीं है, यह केवल विकसित देशों में और वहां भी विशेष अवस्थाओं में ही लागू होता है। उनके मस्तिष्क में ब्रिटेन ही था।

(3) **दुर्गम लेखन शैली**—कीन्स की लेखन पद्धति की भी आलोचना की गयी है। शुम्पीटर का कथन है कि अनावश्यक परिभाषाओं, मान्यताओं तथा विरोधाभासपूर्ण वाक्यों ने उनकी पद्धति को रिकार्डो की शैली के समान बना दिया है। अन्य लेखकों द्वारा उनके ग्रन्थ को सहारा रेगिस्तान के समान दुर्गम बताया गया है।

(4) **समाजीकरण का सिद्धान्त भावुकतापूर्ण**—विनियोग के समाजीकरण के सिद्धान्त को कई आलोचकों ने घातक एवं भावुकतापूर्ण बताया है। नाइट (F. H. Knight) का कथन है कि यह एक सुधार की वाणी है, अर्थशास्त्री का विश्लेषण नहीं।

(5) **सामूहिक मांग-पूर्ति विश्लेषण**—मार्शल के मांग और पूर्ति विश्लेषण को कीन्स ने सामूहिक मांग (Aggregate Demand) तथा सामूहिक पूर्ति के रूप में संशोधित किया है। इस विचार की शुम्पीटर तथा पीगू आदि ने आलोचना की है।

(6) **समयावधि की उपेक्षा**—समय अवधि को अस्वीकार करके कीन्स ने बहुत भूल की है। आर्थिक साम्य समय की अपेक्षा से ही हो सकता है। बिना समय के उसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

(7) **रोजगार को अत्यधिक महत्व**—कीन्स ने रोजगार को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया है। समाज की यह सबसे प्रधान समस्या नहीं है। उन्होंने उत्पादन और आय की अपेक्षाकृत उपेक्षा की है।

(8) **कल्पनापूर्ण गुणक सिद्धान्त**—उनका गुणक सिद्धान्त कल्पना पर आधारित है उसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

(9) **ब्याज की नीची दर का प्रभाव ठीक नहीं समझा गया**—ब्याज की नीची दर से विनियोग बढ़ेगा ही, ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि व्यापार-चक्र पर यही एकमात्र प्रभाव नहीं है।

(10) **अधूरा मूल्य सिद्धान्त**—मूल्य का सिद्धान्त अपूर्ण है। मुद्रा मात्रा सिद्धान्त और मांग तथा पूर्ति के सिद्धान्त का कोई सन्तोषजनक सम्बन्ध कीन्स ने नहीं लगाया है।

(11) **करारोपण और रोजगार का सम्बन्ध संदिग्ध है**—कीन्स का यह कथन कि प्रगतिशील करों से रोजगार बढ़ेगा संदिग्ध है, क्योंकि इससे रोजगार घट सकता है।

(12) **विचित्र परिभाषाएं**—कीन्स की परिभाषाएं भी विचित्र हैं। उन्होंने बचत और विनियोग की ऐसी परिभाषाएं दी हैं कि वे बराबर सिद्ध हो जाते हैं। वस्तुतः उनको बराबर सिद्ध करने में कीन्स असमर्थ रहे हैं।

(13) **कोई क्रान्ति नहीं**—नाइट (F. H. Knight) का कथन है कि कीन्स की पुस्तक ने कोई क्रान्ति नहीं की है, उन्होंने केवल रोजगार के सिद्धान्त में योगदान मात्र दिया है।

(14) **ब्याज सिद्धान्त भ्रान्तिपूर्ण है**—उनके ब्याज सिद्धान्त को भी मौद्रिक, भ्रान्तिपूर्ण एवं अपूर्ण बताया गया है।

(15) **साम्यवादी है या पूंजीवादी**? साम्यवादी उनको पूंजीवादी कहते हैं और पूंजीवादी समाजवादी कहते हैं।

तात्पर्य यह है कि कीन्स के प्रत्येक सिद्धान्त की आलोचना और टीका की गयी है, परन्तु आलोचना मात्र से सिद्धान्त असिद्ध नहीं हो जाता। आलोचना तो एक कसौटी है जिस पर किसी भी नवीन विचार को कसा जाता है और उसके सत्यासत्य का निर्णय समाज करता है। यह क्रिया वर्षों तक और कभी-कभी शताब्दियों तक चलती है। माल्थस तथा रिकार्डो आदि के सिद्धान्त अभी भी विवाद से मुक्त नहीं हो पाये हैं, अतः न तो उनको अस्वीकृत ही किया जा सका है और न स्वीकार ही किया जा सका है। कीन्स के सिद्धान्त अपेक्षाकृत नवीन हैं, उनके विषय के निर्णय में अभी समय लगेगा, परन्तु अग्रलिखित बातें निर्विवाद रूप से कही जा सकती हैं :

Scanned by PDF Scanner

(1) कीन्स ने **आर्थिक चिन्तन को नवीन दिशा** दी है। सामाजिक स्तर पर आर्थिक विश्लेषण को महत्व देकर उन्होंने समष्टि अर्थशास्त्र की नींव डाली है और कोई भी अर्थशास्त्री इस प्रणाली से अप्रभावित नहीं रहा है।

(2) **व्यवहार की कसौटी पर कई सुझाव खरे उतरे हैं।** घाटे की अर्थव्यवस्था, अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप, पंप प्राइमिंग (Pump Priming) तथा उपभोग के महत्व आदि के प्रयोग थोड़ी बहुत मात्रा में सभी देशों ने किये हैं।

(3) **रोजगार के महत्व** को इतना कभी नहीं स्वीकार किया गया था जितना कीन्स के ग्रन्थ के पश्चात्। संयुक्त राष्ट्रसंघ तक ने पूर्ण रोजगार को एक लक्ष्य माना है।

(4) कीन्स ने **सिद्धान्त और व्यवहार को एक सूत्र में बांधने का कार्य** किया। हैने, जो कीन्स के तीव्र आलोचक हैं, इसे एक महत्वपूर्ण योगदान मानते हैं।

(5) कीन्स ने **विभिन्न नीतियों को एक व्यवस्था** (System) **का रूप दिया।** अभी तक अर्थशास्त्री अलग-अलग समस्याओं पर अलग-अलग रूप से विचार करते थे। कीन्स ने सब समस्याओं पर सामूहिक चिन्तन करने का प्रयोग किया।

(6) कीन्स के **सर्वप्रमुख सिद्धान्त** निम्न कहे जा सकते हैं : (क) पूंजी की सीमान्त दक्षता में आशा (Expectation) का महत्व। (ख) तरलता अधिमान का विचार तथा यह विचार कि ब्याज शून्य नहीं हो सकती। (ग) गुणक (Multiplier) को नियन्त्रण व्यवस्था का अंग बताना।

(7) कीन्स ने **प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र की आलोचना करके उनके दोषों को उभारा है।** यह भी उनका योगदान है। उन्होंने समाज को प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र के अन्धविश्वास से बचाया है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कीन्स के प्रमुख आर्थिक विचारों पर प्रकाश डालिए।

2. कीन्स के रोजगार सिद्धान्त का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

3. आर्थिक विचारों पर कीन्स के प्रमुख योगदान का वर्णन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रभावपूर्ण अथवा समर्थ मांग से क्या अभिप्राय है?

2. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति तथा औसत उपभोग प्रवृत्ति को परिभाषित कीजिए।

3. कीन्स के सामाजिक दर्शन को स्पष्ट कीजिए।

4. गुणक पर केन्सीय विचारों पर प्रकाश डालिए।

5. पूंजी की सीमान्त दक्षता से क्या अभिप्राय है?

6. कीन्स के ब्याज सिद्धान्त का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्रभावपूर्ण मांग का सम्बन्ध किस अर्थशास्त्री से है?

(A) जे. बी. से (B) पीगू

(C) जे. एम. कीन्स (D) इनमें से कोई नहीं

2. प्रभावपूर्ण मांग किस तत्व द्वारा निर्धारित होती है?

(A) कुल मांग फलन (B) कुल पूर्ति फलन

(C) उपर्युक्त दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

3. कीन्स का रोजगार सिद्धान्त सम्बन्धित है :

(A) पूर्ण रोजगार से (B) अल्प रोजगार से

(C) (A) और (B) दोनों से (D) इनमें से कोई नहीं

4. कीन्स के रोजगार सिद्धान्त के लिए क्या सत्य नहीं है?

(A) सरकारी हस्तक्षेप (B) पूर्ण रोजगार

(C) अल्पकाल (D) प्रभावपूर्ण मांग

Scanned by PDF Scanner

5. निम्नांकित में किस घटक को कीन्स ने स्थिर माना :

(A) कुल मांग फलन
(B) कुल पूर्ति फलन
(C) (A) और (B) दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं

6. कीन्स के अनुसार अति उत्पादन और बेरोजगारी का कारण है :

(A) बचत में कमी
(B) विनियोग में कमी
(C) कुल मांग में कमी
(D) कुल मांग में वृद्धि

7. कीन्स का रोजगार सिद्धान्त है :

(A) अल्पकालीन
(B) दीर्घकालीन
(C) अतिदीर्घकालीन
(D) सभी सत्य

8. कीन्स के अनुसार रोजगार के स्तर का निर्धारण बिन्दु होता है :

(A) ADF > ASF
(B) ADF = ASF
(C) ADF < ASF
(D) इनमें से कोई नहीं

9. कीन्सवादी रोजगार के सिद्धान्त को कहते हैं :

(A) प्रभावपूर्ण मांग का सिद्धान्त
(B) प्रभावपूर्ण पूर्ति का सिद्धान्त
(C) उपभोग का सिद्धान्त
(D) विनियोग का सिद्धान्त

10. प्रभावपूर्ण मांग किसका सूचक है?

(A) कुल आय
(B) कुल व्यय
(C) कुल आय एवं कुल व्यय
(D) इनमें से कोई नहीं

11. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है :

(A) MPS + MPC = 0
(B) MPS + MPC = 1
(C) MPS + MPC > 1
(D) MPS + MPC < 1

12. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है :

(A) $C = f(y)$
(B) $C = f(r)$
(C) $C = f(y, r)$
(D) $C = f(I, Y)$

13. सही जोड़े बनाइए :

(A) $\frac{C}{Y}$ = सीमान्त बचत प्रवृत्ति (MPS)
(B) $\frac{\Delta C}{\Delta Y}$ = औसत बचत प्रवृत्ति (APS)
(C) $\frac{S}{Y}$ = सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC)
(D) $\frac{\Delta S}{\Delta Y}$ = औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC)

14. $\frac{C}{Y}$ का अर्थ है :

(A) औसत उपभोग प्रवृत्ति
(B) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति
(C) औसत बचत प्रवृत्ति
(D) सीमान्त बचत प्रवृत्ति

15. उपभोग फलन की धारणा का प्रतिपादन किया :

(A) हिक्स
(B) एडम स्मिथ
(C) मार्शल
(D) कीन्स

16. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति अधिक होने पर गुणक होगा :

(A) कम
(B) अधिक
(C) स्थिर
(D) इनमें से कोई नहीं

17. उपभोग प्रवृत्ति का अर्थ है :

(A) उपभोक्ता का उत्कृष्ट उपभोग की ओर झुकाव होना।
(B) आय के विभिन्न स्तरों पर उपभोग तथा आय का अनुपात।
(C) आय का स्तर जिस पर उपभोग व्यय आय के बराबर हो।
(D) आय की अतिरिक्त दर जो उपभोग पर व्यय की जाती है।

Scanned by PDF Scanner

18. सीमांत बचत प्रवृत्ति बराबर है :

(A) $\frac{\Delta Y}{\Delta S}$ (B) $\frac{\Delta S}{\Delta Y}$

(C) $\frac{S}{Y}$ (D) $\frac{Y}{S}$

19. उपभोग व्यय निम्नलिखित में से किस पर निर्भर करता है ?

(A) उपभोग प्रवृत्ति (B) राष्ट्रीय आय

(C) (A) तथा (B) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

20. विनियोग बढ़ने पर पूंजी की सीमान्त उत्पादकता पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(A) बढ़ती (B) घटती

(C) स्थिर (D) इनमें से कोई नहीं

21. लाभ की आशा से प्रेरित होकर किया गया निवेश कहलाता है :

(A) शुद्ध निवेश (B) प्रेरित निवेश

(C) स्वायत्त निवेश (D) वास्तविक निवेश

22. पूंजी की सीमान्त क्षमता सम्बन्धित है :

(A) प्रेरित विनियोग से (B) स्वतन्त्र विनियोग से

(C) (A) तथा (B) दोनों से (D) इनमें से किसी से नहीं

[**उत्तर : 1. (C), 2. (C), 3. (B), 4. (B), 5. (B), 6. (C), 7. (A), 8. (B), 9. (A), 10. (C), 11. (B), 12.** (A), **13. (A) 14. (A), 15. (D), 16. (B), 17. (B), 18. (B), 19. (C), 20. (B), 21. (B), 22. (A)**]

Scanned by PDF Scanner